जब आपके घर में परिपूर्णता हो

जब आप दूसरों को कुछ देने में समर्थ हों

जब आप पर कोई तांत्रिक प्रयोग न कर सके

जब आपके जीवन में रक्षा कवच बन जाए

दो साधनाएं

जो आपका जीवन बदल सकती हैं

साधना क्षेत्र में जब सिद्धि प्राप्त योगियों का वर्णन पढ़ते हैं, तो एक अजीब तार्किक प्रश्न मन में उमड़ते हैं, कि क्या साधना द्वारा ऐसा भी सम्भव है, क्या साधना का इतना उच्च स्तर प्राप्त किया जा सकता है, क्या साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त कर साधक कल्याण के साथ-साथ जनकल्याण का मार्ग भी प्राप्त कर सकता है, इनकी व्याख्या कुछ पृष्ठों में सम्भव नहीं है, साधना का क्षेत्र तो अत्यन्त वृहद् है।

इस अंक में सद्गुरुदेव के श्रीमुख से पूर्व में प्राप्त दो ऐसी साधनाओं का विधान प्रकाशित किया जा रहा है, जिनमें पूर्णता, गुरु कृपा से प्राप्त की जा सकती है।

अन्नपूर्णा साधना

अन्न का तात्पर्य केवल धान्य से ही नहीं है, अन्न का तात्पर्य है, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, लाभ, यश, कीर्ति, और जिस घर में यह सब बातें होती हैं, जहां आने वाले कल की चिन्ता नहीं रहती, जहां स्वयं निश्चिन्त होकर जीवन जिया जाता है और जहां दूसरों को दान देने की जनकल्याण की भावना निहित रहती है, जहां साधु-महात्माओं का आदर-सम्मान होता है, जहां भिक्षुकों को भोजन, वस्त्र दान दिया जाता है, वहां यह सब कृपा अन्नपूर्णा देवी की कृपा से ही सम्भव है।

क्या आपने कभी यह अनुनय किया है कि स्वयं स्वादिष्ट वस्तुओं का आनन्द लेने के साथ यदि दूसरों को यह आनन्द का अनुभव कराया जाय तो कितनी बड़ी खुशी मिलती है और यह दाता की स्थिति 'अन्नपूर्णा सिद्धि' द्वारा प्राप्त हो सकती है, अन्नपूर्णा वह शक्ति है, जिसके द्वारा आपके पास कुछ भी नहीं होते हुए भी आप हजारों को भोजन कराने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, दान दे सकते हैं, घर में कभी कोई कमी नहीं रह सकती है, यह प्रयोग तो अत्यन्त ही सरल एवं शुद्ध मन से किया जाने वाला प्रयोग है, गृहस्थ व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ पूजन सम्पन्न करे तो शीघ्र फल प्राप्ति होती है।

साधना विधि

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना को 12.06.13 से या किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करना चाहिए, यह लगभग एक महीने की साधना है, पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ कर, अगले पुष्य नक्षत्र में ही इस साधना को समाप्त किया जाता है, नित्य रात्रि को इक्कीस माला मन्त्र जप होना आवश्यक है। अत: 12.06.13 से प्रारम्भ करके इसे 10.07.13 को समाप्त करना है।

साधक स्नान कर पीली धोती पहन ले और कन्धों पर पीली धोती डाल दे, यह रेशमी धोती होनी चाहिए, फिर सामने घी का दीपक लगा लें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दे।

इस साधना में निम्न उपकरणों की अनिवार्यता होती है, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए।

1. **अन्नपूर्णा यंत्र**, 2. **अन्नपूर्णा अक्षय सिद्धि फल**, 3. **स्फटिक माला**, जो अन्नपूर्णा यंत्र से सिद्ध हो।

पुष्य नक्षत्र की रात्रि को उत्तर की ओर मुंह कर रेशम के बने हुए आसन पर बैठ जायं, सामने एक हाथ चौड़ा पीला रेशमी वस्त्र बिछा दें और सामने सद्‌गुरुदेव एवं पू. माताजी के चित्र को स्थापित कर दें, फिर यन्त्र को भी उसके सामने ही स्थापित कर दें, इसके बाद सात जायफल रख दें और पास में जल पात्र, दीपक, अगरबत्ती, केसर, कुंकुम, अक्षत तथा नारियल रख दें।

इसके बाद कुंकुम या केसर से गुरुदेव एवं माताजी के चित्र का पूजन करें। यन्त्र को जल से धो कर, पोंछ कर कुंकुम की बिन्दिया लगावें, अगरबत्ती दीपक लगा लें और प्रत्येक जायफल के सामने एक बादाम एक लौंग तथा एक इलायची का भोग लगावें और फिर इक्कीस माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र जप से पूर्व विनियोग और न्यास कर दें, विनियोग का तात्पर्य उस को अनुष्ठान रूप में सम्पन्न करने की अनुज्ञा है और न्यास का तात्पर्य अपने शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करने की प्रक्रिया है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय स्तोत्र महा मन्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्दः महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः क्रीं कीलकं, श्री अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात् समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

हाथ में जल ले कर उच्चारण करता हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद न्यास करें और उच्चारण करता हुआ पूरे शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करता हुआ अपने पूरे शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करें।

न्यास

श्रीमहाकाल भैरव ऋषये नमः शिरसि
उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे,
महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः हृदि,
ह्रीं बीजाय नमः लिंगे
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ,
क्रीं कीलकाय नमः पादयो
समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

मन्त्र

॥ ॐ क्रीं क्रूं क्रों हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं
ॐ ॐ ॐ अन्नपूर्णायै नमः॥

पूरे साधना काल में तीन बातों का पालन आवश्यक है–

1. पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।
2. मध्याह्न में एक समय भोजन करें, पर उसमें स्वादिष्ट एवं विविध व्यंजन तथा खाद्य पदार्थ हों।
3. बीच में व्यवधान या अनियमितता न रखते हुए, अगले पुष्य नक्षत्र तक नित्य रात्रि को इक्कीस माला मन्त्र जप **चैतन्य स्फटिक माला** से करें।

अगले पुष्य नक्षत्र को मन्त्र पूरा होने पर अन्नपूर्णा सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाती है, दूसरे दिन सुबह सात कन्याओं को भोजन करवा दें और इन सभी यन्त्रों और चित्रों को अपने पूजा स्थान में या किसी एकान्त स्थान में स्थापित कर दें। ऐसा करने से परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने लगती है एवं घर में धन-धान्य, लाभ, यश, कीर्ति की वृद्धि होती है।

साधना सामग्री- 480/-